B.A. I (Hons) 10.8.20
II paper

Philosophy

परम तत्व का विचार- अध्यात्मवाद

अध्यात्मवाद मूल तत्व को चेतन या आध्यात्मिक मानता है। ईश्वर, जीवात्मा, मन, सत्ता, चैतन्य, प्रत्यय, आत्मा या मन हैं न कि भूत या जड़। सम्पूर्ण विश्व आध्यात्मिक अर्थात चेतन है। जिस तत्व से विश्व की सम्पूर्ण रचना बनी है वह चेतन या विज्ञान रूप ही चेतन तत्व ही प्रथम है। इसी पर सब निर्भर है। भौतिक वादियों के अनुसार पहले जड़ तत्व और चेतना का स्थान है लेकिन अध्यात्म वादियों के अनुसार पहले चेतन तत्व जड़ का स्थान है।

अध्यात्मवाद विश्व की व्याख्या के प्रकृति नियमों को प्रधान नहीं मानता। इनके अनुसार आत्मा या चेतन सत्ता के अभाव में विश्व की संतोष व्याख्या नहीं हो सकती। अध्यात्मवाद ईश्वर का विरोधी नहीं बल्कि समर्थक है। भौतिक वाद को विज्ञान वाद भी कहा जाता है। अध्यात्मवाद विज्ञान के क्षेत्र में सीमित नहीं रहता, लेकिन इसे अवैज्ञानिक कहना भी गलत होगा क्योंकि आधुनिक वैज्ञानिकों ने विज्ञान और अध्यात्म के बीच के सम्बन्ध को माना है। वैज्ञानिक सत्यों

का ~~[illegible]~~ आध्यात्मवाद से समर्थन किया जा सकता है।

आध्यात्मवाद आत्मिक और नैतिक मूल्यों में आस्था विश्वास करता है इस लिए यह प्रयोजनवाद का समर्थक माना जाता है। इसके अनुसार विश्व-प्रक्रिया बिना प्रयोजन के सम्भव नहीं हो सकती आध्यात्मिक मूल्यों की सिद्धि ही इसका उद्देश्य है। विश्व प्रक्रिया के संचालन में आध्यात्मिक मूल्यों का संयोग रहता है इस लिए यह यंत्रवाद का विरोधी होता है। आध्यात्मवाद सिर्फ प्रत्यक्ष को ही एक मात्र ज्ञान का साधन नहीं मानता है इसके अनुसार आन्तरिक अनुभूति से ही वास्तविकता का ज्ञान होता है बुद्धि-द्वारा या रहस्यात्मक अनुभूति से उसका ज्ञान सम्भव है।

बर्कले भौतिकवाद और अनीश्वरवाद का खण्डन करता है तथा अध्यात्मवाद का समर्थक है यह ज्ञान मीमांसा के आधार पर अध्यात्मवाद का समर्थन किया है वह मनुष्य के ज्ञान का एक मात्र साधन अनुभव को मानता है अतः विश्व का आधार परमात्मा ही है। इस तर्क के द्वारा बर्कले भौतिकवाद और अनीश्वरवाद का खण्डन कर अध्यात्मवाद को सिद्ध करता है

हीगेल तथा (T.H.Green) ग्रीन

भी आध्यात्मवाद का समर्थन करते हैं। वे वस्तु जगत को वस्तु रूप कहते हैं और बुद्धि के अनुकूल है। इस लिए विश्व बुद्धिगम्य होने के कारण आध्यात्मिक सिद्ध होता है विश्व की अनेकता तथा भिन्नता में एकता छिपी हुई है और इस प्रणाली से स्थापित व्यवस्था में अनेकता की असम्बद्धता है। इस लिए विश्व के मूल में आत्मा के रूप में एक असीम सत्ता विद्यमान है।

शंकराचार्य ने मूल तत्व को चिरंतन तथा सर्वव्यापक माना है। मूलतत्व को भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों कालों में सत्य होना चाहिए। शंकराचार्य शुद्ध सत्ता को भी इन लक्षणों से युक्त पाते हैं। शुद्ध सत्ता ब्रह्म है और वही मूल तत्व है। आत्मा के सत्ता को नकारा नहीं जा सकता है। इस लिए आध्यात्मवादी आत्मा को वास्तविक सत्ता मानता है।

पाश्चात्य तथा भारतीय दर्शन में आध्यात्मवादी विचारक अनेक हुए जो सभी मूल तत्व को प्रत्ययात्मक, क्रियात्मक तथा आध्यात्मिक मानते हैं। इन सबों ने मूलतत्व को चैतन्य माना है। तत्वमीमांसा में आध्यात्मवाद को प्रत्ययवाद कहा गया है।